Event:	Book release function (***Tribal Freedom Fighters of India***) and inauguration of Book Exhibition Van of Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting by Addl Secretary Smt Stuti Kacker
Date:	8th October 2009 (Thursday)
Time:	5.00 P.M
Venue:	Book Gallery, Publications Division, Ground Floor, Soochna Bhavan, CGO complex, Lodhi Road, New Delhi

Publications Division
Ministry of Information & Broadcasting
Government of India

BOOK ON TRIBAL FREEDOM FIGHTERS

New Delhi, Thursday, 8 October, 2009

A book on freedom struggles in tribal areas of India and their heroes was released here today. Brought out by Publications Division, Government of India, the book titled ***Tribal Freedom Fighters of India*** written by Shri A.R.N. Srivastava, is based on his extensive field-work in tribal areas. The author is a renowned social anthropologist and had been Head of the Department of Sociology at Allahabad University.

Releasing the book the Chief Guest Smt. Stuti Kacker, Additional Secretary in the Ministry of Information & Broadcasting emphasized the need of such books and said that though tribals are a part of our society, they remain marginalized. We see them but don't know much about them. So, it is essential to document their life style, culture, traditions, customs before they are quietly disappeared.

The book ***Tribal Freedom Fighters of India*** covers tribal movements that took place right from Jharkhand in the North to North-Eastern States, Gujarat in the West and Andhra Pradesh in the South. It is about the Tribal Freedom Movements of various regions of India during the nineteenth and early twentieth Century. It gives an account of the tribal struggles that were waged to safeguard their honour, to protect their cherished freedom, and to get redress against money-lenders, the zamindars, and the British authority who tried to deprive them of all they had.

A Mobile Book Exhibition Van was also inaugurated in the function. Received by the Division as part of the plan scheme, the van will be extremely useful in reaching out to the rural and remote areas. It will also enhance the visibility of the Division's books among the school, college and university students where regular mobile exhibitions would be organised. This will take books to the doorsteps of those who need quality books for information at nominal price.

Earlier, welcoming the guests, Smt. Veena Jain, the Additional Director General (In-charge) of Publications Division told the gathering that the Division has adapted new marketing strategy to reach inaccessible regions.

The sole repository of Gandhian literature that include over a hundred volumes of *Collected Works Of Mahatma Gandhi,* Publications Division also has a good collection of children's literature including folk tales, ancient mythological stories and books on science & technology. The Division has also carved out a niche in the area of Indian history and freedom struggle.

The Division publishes over 100 titles every year in a dozen languages and brings out monthly magazines like Yojana, Kurukshetra, Aajkal, Balbharati. It publishes the popular weekly career journals *Employment News* and *Rozgar Samachar*. The Division also brings out Reference Annual INDIA which contains authentic, updated information about the country.

प्रकाशन विभाग

सूचना और प्रकाशन मंत्रालय

भारत सरकार

आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों पर पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 8 अक्टूबर, 2009

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी आंदोलनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत के ऐसे ही आदिवासी स्वतंत्रता आंदोलनों और उनके नायकों पर एक पुस्तक का विमोचन आज यहां हुआ। प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित पुस्तक *ट्राइबल फ्रीडम फाइटर्स ऑफ इंडिया* के लेखक श्री ए आर एन श्रीवास्तव हैं। श्री श्रीवास्तव ने आदिवासी इलाकों में अपने गहन अध्ययन के आधार पर यह पुस्तक लिखी है। प्रो. श्रीवास्तव समाजशास्त्र के विद्वान हैं और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष भी रहे।

पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि श्रीमती स्तुति कक्कड़, अपर सचिव, सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने किया। उन्होंने आदिवासियों की संस्कृति, लोक-व्यवहार, रीतिरिवाजों के अभिलेखन की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि इससे पहले कि यह धरोहर चुपचाप गुम हो जाए इनका संरक्षण होना चाहिए।

पुस्तक *ट्राइबल फ्रीडम फाइटर्स ऑफ इंडिया* में झारखंड से लेकर पूर्वोत्तर के राज्यों और गुजरात से लेकर दक्षिण में आंध्र प्रदेश तक में उन्नीसवीं और प्रारंभिक बीसवीं सदी में हुए आदिवासी आंदोलनों को शामिल किया गया है। अंग्रेजी शासन, जमींदारों और साहूकारों के उत्पीड़न से अपने सम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए आदिवासियों द्वारा किए गए प्रतिरोधों और संघर्षों को इस पुस्तक में शामिल किया गया है।

कार्यक्रम में प्रकाशन विभाग के एक सचल पुस्तक प्रदर्शनी वाहन का भी उद्घाटन हुआ। इस वाहन से विभाग की पुस्तकों को सुदूर क्षेत्रों के लोगों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी और इस तरह विभाग का आम आदमी तक ज्ञानवर्धक और रोचक पुस्तकें कम दाम में उपलब्ध कराने का ध्येय पूरा होने में मदद मिलेगी। इसके अलावा स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच विभाग की पुस्तकें पहुंचाने में भी इस सचल पुस्तक प्रदर्शनी वाहन का उपयोग हो सकेगा।

इससे पहले श्रीमती वीना जैन, अपर महानिदेशक (प्रभारी) प्रकाशन विभाग ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि प्रकाशन विभाग ने ई मार्केटिंग नीति को अपनाया है जिससे गांवों और दूरदराज तक के लोगों तक पुस्तकें पहुंचाई जा सकें, जिनको कि सूचनाप्रद और सस्त पुस्तकों की ज्यादा जरूरत है।

प्रकाशन विभाग हर साल 100 से ज्यादा पुस्तकें 13 भाषाओं में प्रकाशित करता है। इनके अलावा *योजना, कुरुक्षेत्र, बालभारती* और *आजकल* के साथ-साथ *रोजगार समाचार* और *एंप्लॉयमेंट न्यूज़* विभाग की पत्रिकाएं हैं। विभाग वार्षिक संदर्भ ग्रंथ *भारत* का प्रकाशन भी करता है जिसमें देश के बारे में विश्वसनीय अद्यतन जानकारी होती है।

सौ से ज्यादा खंडों में *संपूर्ण गांधी वांग्मय* के लिए लोकप्रिय प्रकाशन विभाग का बाल साहित्य संकलन भी विलक्षण है जिसमें लोक कथाओं और पौराणिक कथाओं के साथ-साथ विज्ञान और तकनीकी पर पुस्तकें भी शामिल हैं। इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम पर विभाग की पुस्तक श्रृंखलाओं ने भी पाठकवर्ग में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

भूमंडलीकरण पर पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली, शुक्रवार, 4 सितंबर, 2009

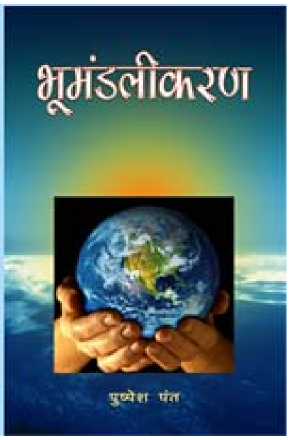

पुस्तक : भूमंडलीकरण
लेखक: पुष्पेश पंत
पृष्ठ सं. : 139
कीमत : 85.00 रु.
ISBN 978-81-230-1556-9

दिल्ली पुस्तक मेले में आज प्रकाशन विभाग की पुस्तक ***भूमंडलीकरण*** का लोकार्पण प्रोफेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल, सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग ने किया। हिंदी भाषा में प्रकाशित इस पुस्तक में भूमंडलीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ गैट से लेकर डब्ल्यूटीओ तक के सफर में भारतीय अनुभव का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

पुस्तक के लेखक अंतर्राष्ट्रीय विषयों के जाने-माने समालोचक और विचारक तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन केंद्र में प्रोफेसर, डॉ. पुष्पेश पंत हैं। उन्होंने अपनी इस कृति में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आयामों की विवेचना करते हुए उभरती चुनौतियों की ओर ध्यान दिलाया है।

आज संचार क्रांति और खुलती अर्थव्यवस्थाओं से देशों की सीमाएं और पारदर्शी हो गई हैं। ऐसे में भूमंडलीकरण की परिकल्पना किसी क्षेत्र तक सीमित नहीं है बल्कि पूरे विश्व के लिए और ज्यादा सच होती जा रही है। भूमंडलीकरण से लोगों का जीवन स्तर उठा है, लेकिन साथ ही विकासशील देशों को विकसित देशों से कड़ी प्रतिस्पर्धा में भी उतरना पड़ रहा है। ऐसे में अपने देश की कठिन स्थितियों में उनके लिए बाजार में बराबरी के दर्जे पर टिके रहना चुनौती है।

भूमंडलीकरण विषय के तौर पर नया है। लेकिन यह पुस्तक रोचक और प्रवाहमय भाषा में आम लोगों को भूमंडलीकरण के विचार से परिचित कराती है।

प्रकाशन विभाग देश की संस्कृति, साहित्य इतिहास, ज्ञान-विज्ञान जैसे विषयों पर सरल भाषा में कम दामों वाली पुस्तकें छापता है। 1995 से हर साल आयोजित होने वाले दिल्ली पुस्तक मेले में भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय का प्रकाशन विभाग शुरू से ही शामिल होता रहा है। इस बार 29 अगस्त से 6 सितंबर 2009 तक आयोजित मेले में प्रकाशन विभाग ने विज्ञान, पर्यावरण, लोक प्रशासन जैसे विषयों पर पुस्तकों के अलावा स्वतंत्रता संग्राम और गांधीजी से संबंधित अनेक दुर्लभ और संग्रहणीय पुस्तकें भी प्रस्तुत की हैं। 1941 में अपनी शुरुआत के बाद से देश में सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े प्रकाशकों में से एक, प्रकाशन विभाग लगभग 8000 पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है।

PUBLICATIONS DIVISION
MINUISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING
GOVERNMENT OF INDIA

BOOK ON GLOBALISATION RELEASED

New Delhi, Friday, 4 September, 2009

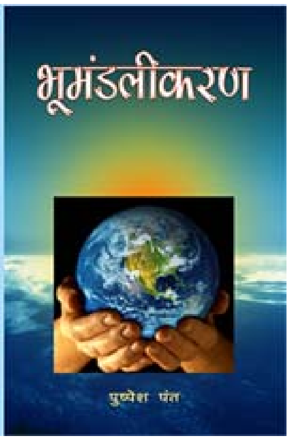

Title: Bhoomandalikaran
Author: Pushpesh Pant
Pages: 139
Price: Rs. 85.00/-
ISBN 978-81-230-1556-9

Publications Division has brought out a book on globalization. The book titled ***Bhoomandalikaran*** in Hindi was released here today by Dr. Purushottam Agrawal, scholar and member, UPSC. The author of the book Dr. Pushpesh Pant is a professor in the School of International Studies, JNU, New Delhi. The book was released in the 15th Delhi Book Fair, Pragati Maidan.

This book by Dr. Pant outlines the idea of global village in today's liberalized competitive world and analyzes its economic, political and cultural aspects. It also underlines the problems and disadvantages of globalization showing up in Indian experiences right from GATT through WTO.

With the opening up of world economies and communication revolution the physical borders of countries are becoming less significant. In such a world the idea of globalization is apt and pertinent. Globalization is perhaps the single most important issue in the present world structure.

Globalization has opened up markets and improved the living standards of people. At the same time, developing countries have to face tough competition from developed markets. In this scenario it is critical for India to analyze the positive and negative effects of globalization. That is the focus of the book.

Publications Division, which is a major media unit of Ministry of Information and Broadcasting, is a regular participant in the Delhi Book Fair. Established in 1941, the Division has published around eight thousand books so far. Keeping in mind all age groups, Publications Division brings out an array of books on a wide range of subjects. Varying from the country's freedom struggle to rich Indian culture, the Division has a long list of books which are invaluable and have historical importance. Today Publications Division is one of the largest public sector publishing organizations in India. With varied subjects and nominal prices, the books published by the Publications Division are within the reach of common man.

Publications Division's Participation in Delhi Book Fair-2009

Publications Division is participating in the 15th Delhi Book Fair (29 August to 6 September, 2009). During the fair, the Division is organizing the following book release function:

Book- Bhoomandalikaran
Author- Dr. Pushpesh Pant
Chief Guest- Dr. Purushottam Agrawal (Member, UPSC)
Date- 04 September, 2009 (Friday)
Time- 04:00 pm
Venue- Pragati Auditorium, Near Administrative Block, Pragati Maidan, N.Delhi
(Entry from Gate No. 3)

PUBLICATIONS DIVISION
MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING
GOVERNMENT OF INDIA

BOOKS ON MARTYRS KHUDIRAM BOSE AND RAJGURU RELEASED

New Delhi, 25th of August 2008

To commemorate the centenary of Khudiram Bose's martyrdom and birth centenary of martyr Rajguru, Publications Division, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India has brought out two books on these revolutionaries. These are *Khudiram Bose: Revolutionary Extraordinaire* (English) written by Dr. Shri Hitendra Patel and *Ajeya Krantikari- Rajguru* (Hindi) by Shri Anil Verma respectively.

The Minister for Information & Broadcasting Shri Priya Ranjan Dasmunsi released these books in the function here today. The first copies of the books were presented to Shri Debasis Roy, Grand Nephew of Khudiram Bose and Shri Satyasheel Rajguru Grand Nephew of Rajguru. In his address he paid glowing tributes to the martyrs who sacrificed their lives for the freedom of their motherland. Releasing the books on two of the nation's most illustrious heroes, he also recalled our tradition of selfless sacrifice, valiant struggle and boundless courage. He congratulated Publications Division for paying homage to two of nation's greatest martyrs in the form of commendable books.

The book *Khudiram Bose: Revolutionary Extraordinaire* reasonably priced at Rs. 85 puts forth several lesser known facets of the young revolutionary. Other than his life and activities, the book also contains the judgments of the High Court in Khudiram Bose's case. Events of the early phase of freedom struggle have been woven into a rich tapestry with support of several rare pictures of Bose and his contemporaries in this book, which is bound to stir patriotic fervour in the readers' hearts.

Partition of Bengal in 1905 had triggered revolutionary activities all over India, particularly in Bengal and compelled youth to break away from the path of representations and requests and took arms against the British rule. Khudiram Bose, perhaps the youngest revolutionary in the history of India's freedom movement, was one such worthy son of Mother India.

Born in 1889 at Habibpur village near Midnapur, West Bengal, Khudiram became the trail-blazer for the militant nationalist movement of India against the imperialist powers. His bombing of a British officer's carriage sent tremors of fear among the British authority. On 11th August 1908 this eighteen year old revolutionary embraced the gallows with a smile on his face and illuminated the way for hundreds of revolutionaries.

Ajeya Krantikari- Rajguru has been written keeping in mind the fact that not much is written about him except for a few scattered articles with repetitive material. To present authentic version of the events associated with the martyr, information is culled out painstakingly from various sources. The price of this book is Rs. 135.

Shivram Hari Rajguru was born in Khed village (now named as Rajguru Nagar) near Pune in Maharashtra on 24 August 1908. While in Varanasi to study Sanskrit and Hindu scriptures, he came in contact with revolutionaries and became active member of Hindustan Socialist Republican Army, coordinated by Chandrashekhar Azad. He was known in the party under the pseudonym of Raghunath. In the famous Lahore Conspiracy case, he was executed on 23 March 1931 along with Bhagat Singh and Sukhdev. With this supreme sacrifice he immortalized his name in the annals of history. He gave his life, so that India may live.

Author of *Khudiram Bose: Revolutionary Extraordinaire* Dr. Hitendra Patel is a reputed scholar of History associated with Rabindra Bharati University, Kolkata. Shri Anil Verma, author of *Ajeya Krantikari- Rajguru* is a judge and a prolific sports writer. He belongs to a family of illustrious freedom-fighters. His grandfather Late Shri Motilal Verma worked with Mahatma Gandhi as well as with Chandrashekhar Azad.

Smt. Sushma Singh, Secretary I&B Ministry paid rich tributes to these worthy sons of Mother India in her inaugural address and thanked Shri Debasis Roy and Shri Satyasheel Rajguru for sparing time for the event.

Welcoming the guests present in the function, Smt. Veena Jain the Additional Director General (In-charge) of Publications Division told that the Division has brought out over a hundred books on freedom struggle. Presently, the Division is bringing out a series of books on the heroes of 1857 to mark the completion of 150 year of our first war of independence. Notable among them are *Nana Sahib, Tatya Tope, Veer Kunwar Singh* and *Bahadur Shah Zafar*. *Begam Hazrat Mahal* will also hit the stands soon. Other recently published books on our freedom struggle include: *1857-the Uprising, Delhi in 1857*, and books on Bhagat Singh in English and Hindi. The two books being released today are further addition to our books dedicated to India's great martyr, she added.

The Song & Drama Division, Ministry of Information & broadcasting gave an inspiring performance paying homage to great sons of Mother India.

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

खुदीराम बोस और राजगुरु पर प्रकाशन विभाग की पुस्तकों का लोकार्पण

नई दिल्ली, 25 अगस्त, 2008

शहीद खुदीराम बोस की शहादत की शताब्दी तथा शहीद राजगुरु की जन्मशती के उपलक्ष्य में प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार ने दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इन दोनों पुस्तकों *खुदीराम बोस- रिवोल्यूशनरी एक्स्ट्राऑर्डिनेयर* (लेखक- डा. हितेंद्र पटेल) तथा *अजेय क्रांतिकारी राजगुरु* (लेखक- श्री अनिल वर्मा) का लोकार्पण सूचना और प्रसारण मंत्री श्री प्रियरंजन दासमुंशी ने आज यहां एक समारोह में किया।

समारोह में पुस्तकों की प्रथम प्रतियां शहीद खुदीराम बोस के पौत्र श्री देबासीस रॉय तथा शहीद राजगुरु के पौत्र श्री सत्यशील राजगुरु को भेंट की गईं। समारोह में श्री दासमुंशी ने अपने संबोधन में मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए से अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने वाले इन शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। साथ ही उन्होंने देश की निस्वार्थ त्याग, वीरतापूर्ण संघर्ष और अथाह हिम्मत की परंपरा को भी याद किया। उन्होंने इन महान राष्ट्रभक्तों पर पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रकाशन विभाग को बधाई दी।

पुस्तक *खुदीराम बोस- रिवोल्यूशनरी एक्स्ट्राऑर्डिनेयर* इस युवा क्रांतिकारी के जीवन और व्यक्तित्व के कई अनछुए आयामों को उभारती है। 85 रुपए की इस पुस्तक में खुदीराम बोस की जीवन यात्रा के साथ-साथ कलकत्ता उच्च न्यायालय में उनके मामले पर न्यायाधीशों के फैसलों को भी शामिल किया गया है। खुदीराम और उनके समसामयिक महानुभावों के दुर्लभ चित्रों से सजी यह पुस्तक उस समय के क्रांतिकारी आंदोलन की जीवंत तसवीर खींचती है।

1905 में बंगाल के विभाजन के बाद भारतीयों, खास तौर पर बंगाल के लोगों का मन अंग्रेजों के प्रति गहरी घृणा से भर गया। इस समय कई युवाओं ने सशस्त्र विरोध का रास्ता चुना। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संभवतः सबसे कम उम्र के क्रांतिकारी खुदीराम बोस उन्हीं वीर सपूतों में से थे जिन्होंने भारत मांता की रक्षा के लिए हथियार उठा लिए।

पश्चिम बंगाल के मिदनापुर के पास हबीबपुर गांव में वर्ष 1889 में जन्मे खुदीराम ने अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों से राष्ट्रवादी आंदोलन को नया ओज दिया। उनके द्वारा एक अंग्रेज अधिकारी के वाहन पर बम फेंकने की घटना ने अंग्रेजी साम्राज्य को हिला कर रख दिया। इस मामले में 11 अगस्त 1908 को 18 साल के इस नौजवान को फांसी दे दी गई। आजादी के लिए हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूमने वाले इस शहीद ने सैकड़ों युवा राष्ट्रभक्तों को क्रांति का नया रास्ता दिखाया।

भगत सिंह और सुखदेव के साथ बहादुरी से फांसी के तख्ते पर झूल कर शहीदों की प्रथम पंक्ति में शामिल हो जाने वाले राजगुरु के बारे में विश्वसनीय जानकारी का नितांत अभाव है। इस कमी को पूरा करने के विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पुस्तक *अजेय क्रांतिकारी राजगुरु* लिखी गई है। इसके लिए कई मूल स्रोतों से सूचनाएं एकत्र की गईं। पुस्तक की कीमत 135 रुपए है।

शिवराम हरि राजगुरु का जन्म महाराष्ट्र के पुणे जिले के खेड़ गांव (अब राजगुरु नगर) में 24 अगस्त 1908 को हुआ। वाराणसी में संस्कृत धर्मग्रंथों के अध्ययन के दौरान वे क्रांतिकारियों के संपर्क में आए और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य बन गए जिसका संचालन चंद्रशेखर आज़ाद कर रहे थे। लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिए लाहौर षड्यंत्र मामले में भगतसिंह और सुखदेव के साथ राजगुरु को भी 23 मार्च 1931 को लाहौर जेल में फांसी दे दी गई। अपनी इस शहादत से वे इतिहास में अमर हो गए।

पुस्तक *खुदीराम बोस- रिवोल्यूशनरी एक्स्ट्राऑर्डिनेयर* के लेखक डॉ. हितेंद्र पटेल इतिहास के विद्वान हैं और रवींद्र भारती विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं। *अजेय क्रांतिकारी राजगुरु* के लेखक अनिल वर्मा न्यायाधीश हैं और खेल संबंधी विषयों पर लिखते हैं। उनके पितामह स्व. श्री मोतालाल वर्मा ने महात्मा गांधी और चंद्रशेखर आजाद जैसे राष्ट्रभक्तों के साथ देश की आजादी के लिए काम किया।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय में सचिव श्रीमती सुषमा सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में देश के इन सपूतों को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। साथ ही श्री देबासीस रॉय तथा श्री सत्यशील राजगुरु को कार्यक्रम में शामिल होकर उसकी गरिमा बढ़ाने के लिए धन्यवाद दिया।

अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रकाशन विभाग की अपर महानिदेशक (प्रभारी) श्रीमती वीना जैन ने बताया कि विभाग स्वतंत्रता संग्राम पर सौ से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है। इन दिनों विभाग 1857 के संग्राम के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर '*1857 के अमर सेनानी*' श्रृंखला के तहत पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है। इस श्रृंखला की कुछ पुस्तकें हैं- *नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे, वीर कुंवर सिंह* और *बहादुरशाह ज़फर*। इस श्रृंखला की *बेगम हजरत महल* भी शीघ्र प्रकाशित होने वाली है। स्वतंत्रता आंदोलन पर विभाग की कुछ अन्य पुस्तकें- *1857- द अपराइज़िंग, डेल्ही इन 1857,* और भगतसिंह पर हिंदी व अंग्रेजी में दो पुस्तकें शामिल हैं।

इस अवसर पर गीत और नाटक प्रभाग के कलाकारों ने प्रेरणास्पद गीतों के जरिए शहीदों को याद किया।

PIBLICATIONS DIVISION
MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING
GOVERNMENT OF INDIA

I NEVER CONQUERED, I SURRENDERED TO HIMALAYAS: MOUNTAINEER SANTOSH YADAV

PUBLICATIONS DIVISION’S BOOK ON MOUNTAINEERING RELEASED

New Delhi, Thursday, September 4, 2008

“I never conquered, I surrendered to Himalayas”. These were the words of renowned mountaineer Smt. Santosh Yadav while releasing a book in Hindi on mountaineering titled *Parvatarohan ka romanch* in the ongoing 14th Delhi Book Fair today. Brought out by Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, the book is written by Shri Manohar Puri**.**

As the Chief Guest in the function, Padmashree Smt. Yadav, who has a record of scaling Mount Everest twice in the same year, shared her experiences as a mountaineer with the august gathering and gave tips to climbers. She said that with strong will power and sincerity towards the goal everyone can scale such heights.

Welcoming the guests, the Additional Director General (Employment News), Publications Division Shri Ghanshyam Goel especially thanked the Everest conqueror Santosh Yadav and said that her glorious mountaineering expeditions have greatly contributed towards women’s empowerment.

The 210 page book *Parvatarohan ka romanch*, reasonably price at Rs. 110, explains the basic and technical aspects of this adventure sport in simple and lucid way. The author Shri Puri explained that trekking and mountaineering open up great scope for tourism in our country and also we get to know the culture of the societies living in far flung areas of our country.

प्रकाशन विभाग

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

भारत सरकार

मैंने एवरेस्ट को विजय नहीं किया, उसे नमन किया: पर्वतारोही संतोष यादव

पर्वतारोहण पर प्रकाशन विभाग की पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली, 4 सितंबर, 2008

"मैंने एवरेस्ट को विजय नहीं किया, उसे नमन किया"। यह बात सुविख्यात पर्वतारोही संतोष यादव ने नई दिल्ली में चल रहे चौदहवें दिल्ली पुस्तक मेले में पुस्तक *पर्वतारोहण का रोमांच* के लोकार्पण समारोह में कही। प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार की इस ताजा पुस्तक के लेखक मनोहर पुरी हैं।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेते हुए पद्मश्री श्रीमती यादव ने अपने पर्वतारोहण के अनुभव आमंत्रितों के साथ बांटे साथ ही उन्हें इस साहसिक खेल के कुछ नियम भी बताए। एक वर्ष के भीतर दो बार एवरेस्ट पर चढ़ने वाली संतोष यादव ने कहा कि दृढ़ इच्छाशक्ति और लक्ष्य के प्रति ईमानदारी से हर व्यक्ति अपने जीवन में ऊंचाइयों को छू सकता है।

कार्यक्रम में आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए अपर महानिदेशक (रोजगार समाचार) श्री घनश्याम गोयल ने पर्वतारोही श्रीमती संतोष यादव का विशेष रूप से आभार जताया कि और कहा कि उन्होंने एवरेस्ट विजय और ऐसे दूसरे कठिन अभियानों में सफल होकर उन्होंने महिला सशक्तीकरण को मजबूती दी है।

211 पृष्ठों वाली 110 रुपए कीमत की इस पुस्तक में मनोहर पुरी ने सरल भाषा में इस गूढ़ विषय को प्रस्तुत किया है। कार्क्रम में पुस्तक का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि बोलचाल की भाषा में पहाड़ों पर चढ़ना ही पर्वतारोहण है। परंतु पर्वतारोहण का अर्थ किसी पर्वत के शिखर पर पहुंचना मात्र नहीं बल्कि प्रकृति को जानना, उसके साथ रहना और उसकी खोज करना है। साधारण शब्दों में, अलग-अलग ऊंचाइयों वाले पर्वतों पर कई प्रकार के उपकरणों की सहायता से आरोहण करना ही पर्वतारोहण है।

लेखक श्री पुरी स्वयं पर्वतारोही हैं और साहसिक खेलों पर अनेक पुस्तकें लिख चुके हैं। अपनी इस ताजा पुस्तक में उन्होंने साहसिक खेल के रूप में पर्वतारोहण के ब्यौरे के साथ ही इसमें काम आने वाले उपकरणों, इसमें आने वाली बाधाओं, कठिन हिमालय के बर्फीले पहाड़ों पर शिविर लगाने, स्नो क्लाइंबिंग जैसे मुद्दों पर तकनीकी जानकारी दी है। पाठकों की सुविधा के लिए पुस्तक के अंत में पर्वतारोहण से संबंधित शब्दावली भी दी गई है।

PIBLICATIONS DIVISION
MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING
GOVERNMENT OF INDIA

BOOK ON ACHARYA RAMCHANDRA SHUKLA RELEASED

New Delhi, Wednesday, September 3, 2008

Publications Division has brought out a biographical book on Acharya Ramchandra Shukla**.** The book with the title *Acharya Ramchandra Shukla* was released by Prof. Manager Pandey**,** renowned Hindi critic and scholar in the ongoing Delhi Book Fair today.

Acharya Ramchandra Shukla is considered to be the father of Hindi criticism. Most of the books on Acharya Shukla available in the market are focused mainly on his works as a critic. But this book written by his granddaughter Mukta and great-granddaughter Kusum Chaturvedi, also presents various hitherto unknown aspects of his familial and social life. Dr. Mukta, the Co-Director of 'Acharya Ramchandra Shukla Sahitya Shodh Sansthan' Varanasi, herself is an established writer.

Discussing the inspiration to write the book, the author Dr. Mukta said that there were several misconceptions about Shuklaji in the literary world which had to be cleared. For this reason, she was inspired to write this authentic biography of Acharya Shukla which is based on facts and documents. The 277 page book complete with rare pictures of Acharya Shukla is reasonably priced at Rs. 165.

Welcoming the guests in the function the Additional Director General (Employment News) Shri Ghanshyam Goyal reminded that Acharya Shukla always insisted on keeping Hindi simple, as a language of the common man.

About Publications Division, he said that started small in 1941, it is one of the biggest publishing organizations in India. With a mandate to publish books on matters of national importance at affordable prices, the Division publishes books in thirteen Indian languages. It has nearly 8,000 titles in English, Hindi and other major Indian languages to its credit. By traveling to various national and international book fairs in India and abroad, the Division has made a mark on the people who want to discover India.

Mentioning about its journals he underlined the unique fact about the Division that it brings out a journal– 'Yojana'- in thirteen languages simultaneously. Literary magazine Aajkal in Hindi and Urdu, children's monthly Bal Bharati in Hindi, Kurukshetra on rural development in English and Hindi and the weekly Employment News are other priceless possessions in its kitty. Employment News with a circulation of over six lakh copies per issue has become one o the largest circulated career weekly of its own kind in the world.

प्रकाशन विभाग

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

भारत सरकार

आचार्य रामचंद्र शुक्ल पर प्रकाशन विभाग की पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली, 3 सितंबर, 2008

यहां चल रहे चौदहवें दिल्ली पुस्तक मेले में आज प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हिंदी आलोचना के पितामह रामचंद्र शुक्ल की जीवनी *आचार्य रामचंद्र शुक्ल* (लेखक: मुक्ता और श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी) का लोकार्पण हिंदी के प्रख्यात आलोचक और विद्वान प्रोफेसर मैनेजर पांडे ने किया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी आलोचना के जनक माने जाते हैं। विभाग ने उन पर हाल ही में यह पुस्तक *आचार्य रामचंद्र शुक्ल* प्रकाशित की है। शुक्ल जी पर ज्यादातर पुस्तकें उनके आलोचनाकर्म पर केंद्रित हैं। दुर्लभ चित्रों से युक्त यह जीवनी उनके परिवारजनों द्वारा लिखी गई है जो बाजार में शुक्लजी पर उपलब्ध अन्य पुस्तकों की तुलना में विशिष्ट है।

पुस्तक की दो लेखिकाओं में से डा. मुक्ता *आचार्य रामचंद्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान* वाराणसी, की सह-निदेशक और शुक्लजी की प्रपौत्री, तथा श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी उनकी पौत्री हैं। 277 पृष्ठों की इस पुस्तक की कीमत 165 रुपए है। इसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल की पारिवारिक पृष्ठभूमि, प्रतिभा का प्रस्फुटन और विकास, रचना संसार: विहंगम दृष्टि, बहुआयामी व्यक्तित्व, रचनात्मक अवदान जैसे अध्यायों में बांट कर लेखिकाद्वय ने पारिवारिक एलबम से निकाले कई दुर्लभ चित्रों से सजाया है।

कार्यक्रम में अपनी पुस्तक का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए डॉ. मुक्ता ने कहा कि शुक्ल जी के बारे में कई भ्रांतियां साहित्य जगत में प्रचलित हैं, जिन्हें दूर करने के लिए उन्होंने यह प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि यह शुक्लजी से जुड़े तथ्यों पर आधारित प्रामाणिक जीवनी है।

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत करते हुए अपर महानिदेशक (रोजगार समाचार) श्री घनश्याम गोयल ने याद दिलाया कि आचार्य शुक्ल ने हिंदी को कठिन न बनाकर आम आदमी की बोलचाल की भाषा बनाने पर जोर दिया था।

प्रकाशन विभाग के बारे में उन्होंने बताया कि 1941 में शुरुआत से अब तक विभाग राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न पहलुओं पर कोई 8000 पुस्तकें छाप चुका है। विभाग हिंदी और अंग्रेजी के अलावा 13 क्षेत्रीय

भाषाओं में भी पुस्तकें प्रकाशित करता है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के डेढ़ सौ वर्ष पूरे होने के सिलसिले में विभाग '1857 के अमर सेनानी' श्रृंखला में महान नायकों पर पुस्तकों का प्रकाशन किया है।